

कोटा के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन

डॉ. पिकी व्यास

सहायक आचार्य, कौटिल्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, नयागांव, कोटा

सारांश

व्यावसायिक संतुष्टि एक शिक्षक की अपने काम के प्रति संतुष्टि की भावना है जिसमें उनकी आवश्यकताओं अपेक्षाओं और मूल्यों की पूर्ति शामिल है। यह एक महत्वपूर्ण विषय है जो कर्मचारियों के प्रदर्शन उत्पादकता और संगठन के समग्र प्रदर्शन को प्रभावित करता है। उचित वेतन और लाभ कर्मचारियों की संतुष्टि के लिए आवश्यक हैं। कार्य वातावरण सुरक्षित और स्वस्थ कार्य वातावरण कर्मचारियों की संतुष्टि को बढ़ावा देता है। कार्य की स्वायत्तता कर्मचारियों को अपने काम में स्वायत्तता देने से उनकी संतुष्टि बढ़ती है। कर्मचारियों को उनके काम के लिए मान्यता और पुरस्कार देने से उनकी संतुष्टि बढ़ती है। उत्पादकता में वृद्धि संतुष्ट कर्मचारी अधिक उत्पादक होते हैं। संतुष्ट कर्मचारी संगठन में अधिक समय तक रहते हैं। व्यावसायिक संतुष्टि पर शोध करने से संगठन को अपने कर्मचारियों की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को समझने में मदद मिलती है। इससे संगठन अपने कर्मचारियों की संतुष्टि बढ़ाने के लिए रणनीतियां बना सकता है। व्यावसायिक संतुष्टि का अर्थ विभिन्न अभिवृत्तियों के परिणाम से है। जिसका सम्बन्ध कर्मचारी / शिक्षक के व्यवसाय से होता है। इसके साथ-साथ अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए जो अभिवृत्ति वह रखता है वह व्यावसायिक संतुष्टि का परिणाम ही होती है।

सूचक शब्द - व्यावसायिक, राजकीय, सर्वांगीण, आध्यात्मिक, अभिवृत्ति, संतुष्टि इत्यादि।

प्रस्तावना-

शिक्षा के द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता है तथा नई पीढ़ी अपनी संस्कृति आधारभूत नियमों तथा इतिहास को जानती है। शिक्षा जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्यु पर्यन्त तक चलती है व्यक्ति के विकास में शिक्षा की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, सामाजिक व राष्ट्रीय प्रगति तथा सभ्यता. संस्कृति के उत्थान के लिए अनिवार्य है। शिक्षा एक और व्यक्ति के ज्ञानात्मक क्रियात्मक व भावनात्मक पक्ष का संतुलित विकास करती है वही दूसरी ओर व्यक्ति को समाजोपयोगी भी बनाती है। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री जे. एस. रॉस के अनुसार, "विद्यालय एक उद्यान है।

शिक्षार्थी एक कोमल पौधा तथा शिक्षक एक सतर्क माली। शिक्षक अपने शिक्षण को ऐसा प्रभावी बनाए जिससे बालक ईमानदारी से जीवन जीते हुए स्वयं शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास कर सके। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक का कार्य सिखाना है और शिक्षार्थी का कार्य सीखना, शिक्षक मूल्यांकन द्वारा मालूम करता है कि बालकों का मूल्यांकन ही उसका स्व-मूल्यांकन है। वही शिक्षक अपने शिष्य में ज्ञान का दीप जला सकता है जिसका स्वयं ज्ञानदीप प्रज्वलित हो। भारत की भाग्य का निर्माण करने वाले शिक्षकों का व्यवसाय से संतुष्ट होना अत्यंत आवश्यक है व्यावसायिक संतुष्टिव्यक्ति की शारीरिक व्यक्तिगत एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना कहलाती है शिक्षक की व्यावसायिक संतुष्टि का प्रभाव उनके कार्य की गुणवत्ता पर दिखाई देता है प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षक की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों संख्या 50-50 पर सर्वेक्षण विधि से व्यावसायिक संतुष्टि में अंतर पाया गया है।

संतुष्टि

ब्लूम एवं नेलर के अनुसार, " व्यावसायिक संतुष्टि या संतोष शिक्षक की उन अभिवृत्तियों का परिणाम है जिन्हें वह अपने कार्य या व्यवसाय से संबंधित अनेक कारकों एवं सामान्य जीवन के प्रति बनाए रखना है।"

व्यवसाय से मिलने वाली संतोष व्यक्ति की पहली प्रवृत्तिजन्य आवश्यकता है अर्थात् अपने स्वभाव, प्रवृत्ति, रुचि और इच्छाओं के अनुरूप प्राप्त कार्य से ही संतोष या संतुष्टि प्राप्त कर सकता है। संतुष्टि का मूल्य मनुष्य के जीवन में नितांत आवश्यक है। संतुष्टि के बिना मनुष्य का जीवन भटकाव की ओर चला जाता है कहा भी गया है कि 'संतोष परम सुख' अर्थात् संतोष ही सबसे बड़ा सुख है।

व्यावसायिक संतुष्टि या कर्मचारी संतुष्टि सबसे जरूरी है कार्य से संतोष प्राप्ति चाहे वह कार्य पसन्द हो या नहीं। व्यावसायिक संतुष्टि एक बहुत बड़ा तत्व है जिसके अन्तर्गत कई शिक्षक एक समूह बनाकर विवेकाधीन होकर शिक्षण कार्य करते हैं। इसमें यदि कार्य उनकी पसन्द क्षमता पद एवं योग्यता अनुकूल है तो मन लगाकर करते हैं इसके विपरीत यदि कार्य पद एवं योग्यता के प्रतिकूल है तो कार्य में अवधान उत्पन्न होने लगते हैं मानसिक संतुलन के साथ-साथ चिन्तन भी प्रभावित होता है। इसमें जो शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट हैं वो मानसिक संतुलन रखते हैं, जो कार्य करने की प्रवृत्ति को प्रेरित करता है उसके मनोबल को बनाए रखता है। यदि शिक्षक अपने कार्य से असंतुष्ट होते हैं तो उनकी अध्ययन कराने व करने की क्षमता कम होती जाती है। यदि गहनता से इसका अध्ययन किया जाए तो यही कहा जा सकता है कि व्यावसायिक संतुष्टि शिक्षक की एक प्रकृति है, जो अनेकों कारकों के सम्पर्क में आने से बदलती रहती है एवं उसकी कार्य क्षमता को प्रभावित करती है। इसलिए शिक्षण जीविकोपार्जन का साधन मात्र न होकर उद्देश्य प्राप्त करने की प्रेरणा बने।

समस्या का औचित्य

प्रस्तुत अध्ययन में राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर शोध किया जाएगा। जिससे शिक्षक किन कारणों से अपने शिक्षण व्यावसायिक के प्रति असंतुष्ट होते हैं, ज्ञात किया जाएगा। उनके असंतुष्टि के कारणों का पता लगाया जाएगा उनकी अरुचि को दूर करने का प्रयास किया जाएगा। व्यावसायिक संतुष्टि - कार्य के प्रति समर्पण ही व्यवसायिक संतुष्टि का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। व्यावसायिक संतुष्टि के लिए आवश्यक है स्वार्थ से परे हटकर लाभ प्राप्ति के अवसरों को खोजने के बजाय अपने कार्य को कर्तव्यनिष्ठ होकर समर्पित भाव से सेवा करें। बिजोय के अनुसार (1988). "अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि व व्यावसायिक अभिप्रेरणा का अध्ययन करके यह पाया कि अध्यापक अपने व्यावसायिक से संतुष्ट होने पर अपने व्यावसायिक से अभिप्रेरित होते हैं।"

शोध अध्ययन के उद्देश्य-

1. शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना।

अनुसंधान विधि -

इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि के माध्यम से प्रदत्त सकलन एवं निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न किया जायेगा जिसके लिए चयनित शिक्षण संस्थाओं से न्यादर्श लिया गया।

परिकल्पना -

1. शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिसीमन -

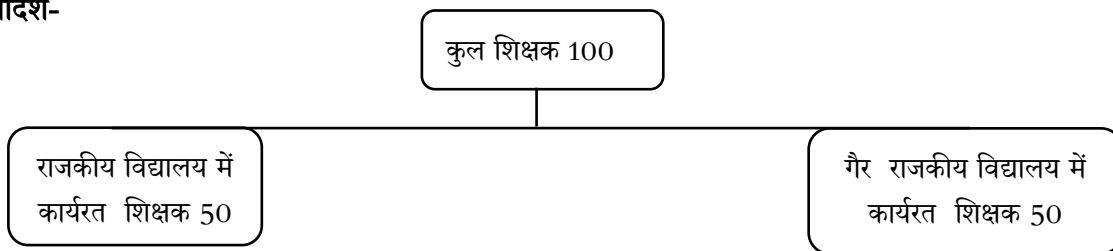
प्रस्तुत शोध कोटा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित के राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों को परिसीमत किया गया है।

शोध प्रक्रिया- शोध कार्य सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है।

उपकरण -

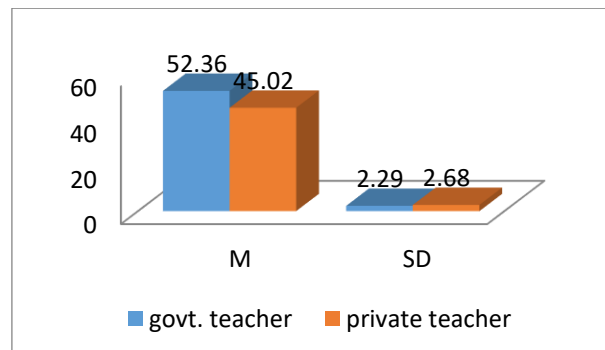
इस अध्ययन में व्यवसायिक संतुष्टि के मापन हेतु डॉ. एस.पी. गुप्ता एवं डॉ. जे.पी. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित "सन्तोष मापनी का प्रयोग किया जाएगा।

न्यादर्श-



सारणी संख्या: 1

कोटा के शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षको की व्यावसायिक सतुष्टि को दर्शाती तालिका।



समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाण विचलन SD	टी परीक्षण का मान	सार्थकता स्तर

शहरी क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि	50	52-36	2-29	13-089	सार्वजनिक अन्तर है
शहरी क्षेत्रों में गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि	50	45-02	2-68		

सांख्यिकीय विश्लेषण -

स्वतंत्रता का अंश (df) $(N_1+N_2-2) = 50+50-2=98$

df = 98 के लिए मान 0.05 = 1.98

df = 98 के लिए मान 0.01 = 2.62

व्याख्या एवं विश्लेषण

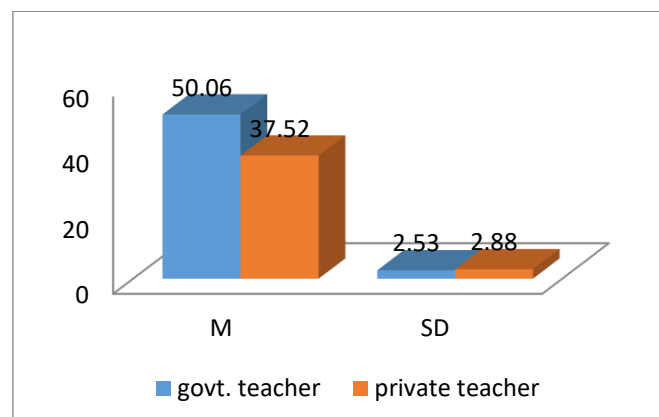
तालिका संख्या 1 के अनुसार शहरी क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का मध्यमान क्रमशः 52.36 एवं 45.02 प्राप्त हुए इनका प्रमाण विचलन क्रमशः 2.29 एवं 2.68 प्राप्त हुआ।

इनका टी का मूल्य 13.089 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता के अंश (df) 98 के लिए सार्थकता के स्तर 0.05 एवं 0.01 के मान 1.98 एवं 2.62 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

इसका तात्पर्य यह है कि शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर होता है।

सारणी संख्या: 2

कोटा के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि को दर्शाती तालिका।



समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाप विचलन SD	टी परीक्षण का मान	सार्थकता स्तर
ग्रामीण क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षको की व्यावसायिक संतुष्टि	50	50.06	2.53	23.143	सार्थक अन्तर नहीं
ग्रामीण क्षेत्रों में गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षको की व्यावसायिक संतुष्टि	50	37.52	2.88		

सांख्यिकीय विश्लेषण -

स्वतंत्रता का अंश $df = (N_1 + N_2 - 2) = 50 + 50 - 2 = 98$

$df = 98$ के लिए मान $0.05 = 1.98$

$df = 98$ के लिए मान $0.01 = 2.62$

व्याख्या एवं विश्लेषण -

तालिका संख्या 2 के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का मध्यमान क्रमशः 50.06 एवं 37.52 प्राप्त हुए इनका प्रमाप विचलन क्रमशः 2.53 एवं 2.88 प्राप्त हुआ।

इनका टी का मूल्य 23.143 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता के अंश वृद्धि 98 के लिए सार्थकता के स्तर 0.05 एवं 0.01 के मान 1.98 एवं 2.62 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

इसका तात्पर्य यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय के शिक्षको की व्यावसायिक संतुष्टि एवं गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षको की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. प्रस्तुत शोधकार्य शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर शोध शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय में रुचि उत्पन्न करने में उपयोगी हो सकेगा।
2. व्यावसायिक संतुष्टि एक ऐसा विषय है जिससे शिक्षक का व्यवहार परिवर्तन होता है, जो विद्यार्थियों की शैक्षिक विकास पर प्रभाव डालता है। शिक्षकों में शिक्षण के प्रति रुचि उत्पन्न कर विद्यार्थियों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में उपयोगी साबित हो सकेगा।
3. शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति उत्पन्न रुचि भावी शिक्षकों हेतु मार्गदर्शक एवं उपयोगी सिद्ध हो सकेगी।

निष्कर्ष

कोटा के शहरी क्षेत्र में स्थित राजकीय विद्यालय में कार्यालय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर होता है। कोटा के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

प्रस्तुत शोध में प्राप्त परिणामों के आधार पर सामान्यकरण किया जाता है कि असंतुष्टि का प्रमुख कारण गैर राजकीय विद्यालय सेवाओं में शिक्षकों की चयन प्रक्रिया में उच्च प्रतियोगिता रहती है इसलिए स्वयं को विद्यालय व शिक्षक संस्थाओं में स्थापित कर कार्य कुशलता को बनाए रखना होता है अतः अपने व्यवसाय से कुंठित रहते हैं और उनकी व्यावसायिक संतुष्टि प्रभावित होती है।

प्रस्तुत शोध में प्राप्त परिणामों के आधार पर सामान्यकरण किया जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय के शिक्षक स्वयं को प्राप्त वेतन एवं अन्य संबंधित सुविधाओं से उच्च सीमा तक संतुष्ट है जबकि गैर राजकीय विद्यालय के प्राप्त वेतनअवकाश कार्य की प्रकृतिकर्मचारीयों का आर्थिक सहयोग संबंधित सुविधाएं से संतुष्ट नहीं होते हैं और संतुष्टि का प्रमुख कारण गैर राजकीय विद्यालय सेवाओं में शिक्षकों की चयन प्रक्रिया में उच्च प्रतियोगिता रहती है इसलिए स्वयं को विद्यालय व शिक्षक संस्थाओं में स्थापित कर कार्य कुशलता को बनाए रखना होता है अतः यह अपने व्यवसाय से कुंठित होते हैं और उनकी व्यावसायिक संतुष्टि प्रभावित होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. बोडियाल S.N.सन (1972) शिक्षक अनुसंधान का विधि शास्त्र राजस्थान ग्रंथ अकादमी, जयपुर
2. भटनागर शैक्षिक एवं मानसिक मापन आर लाल बुक डिपो, मेरठ
3. वेस्ट जे, (1983) रिसर्च इन एजुकेशन पेंटिंग हाल का इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
4. भार्गव महेश (1997) आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन हर प्रसाद भार्गव, आगरा
5. गुप्ता एसपी एवं गुप्ता अलका (2005) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
6. मेहता विहार (2006) उबुड़ते भारतीय समाज में अध्यापक शिक्षा बी.एड. कॉलेज, कोटा।
7. पी.डी. पाठक शिक्षा मनोविज्ञान विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा
8. आर.एस. शर्मा, शिक्षा अनुसंधान
9. मिश्र, आर.एन. (2010). *शिक्षक मनोविज्ञान*. आगरा: विनीत पब्लिकेशन।
10. शर्मा, आर.ए. (2011). *शैक्षिक शोध पद्धति*. मेरठ: र.लाल पुस्तक भवन।
11. गुप्ता, रेखा (2012). *राजकीय एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन*. राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (अप्रकाशित शोध)।
12. श्रीवास्तव, एस.के. (2015). *शिक्षण व्यवसाय में व्यावसायिक संतुष्टि का मनोवैज्ञानिक अध्ययन*. वाराणसी: भारती पब्लिकेशन।
13. जोशी, सुधा (2018). *ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन*. कोटा विश्वविद्यालय।